87

एक प्रश्न जिसका उज़र सब को देना आवश्यक है

बाइबल पाठ #38

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह (क्रमश:)।
ज. शुक्रवार: यीशु की मृत्यु का दिन (क्रमश:)।
7. रोमी मुकदमा (क्रमश:)
ख. चरण दो: हेरोदेस अन्तिपास के सामने (दोषी नहीं पाया गया) (लूका 23:8-12)।
ग. चरण तीन: पिलातुस के सामने (मृत्यु का दण्ड) (मत्ती 27:15-31क; मरकुस 15:6-20क; लूका 23:13-25; यूहन्ना 18:39-19:16)।

परिचय

हमारा पिछला पाठ यीशु के मुकदमों पर अन्तिम पाठ का पहला भाग था। इसमें ज़ोर ''मैं यीशु को क्या करूं?'' प्रश्न पर दिया गया था (देखें मत्ती 27:22)। हमने दो लोगों को देखा, जिन्होंने अपने उत्तर ज़ोर देते हुए दिए थे: पतरस के कहने का अर्थ था ''मैं उसका इनकार करूंगा!'' जबकि महासभा का उत्तर था, ''हम उस पर दोष लगाएंगे!'' परन्तु एक और व्यक्ति था, जिसे इस प्रश्न का उत्तर देना था: पिलातुस को मालूम था कि उसे कहना चाहिए कि ''मैं उसे छोड़ दूंगा,'' परन्तु ऐसा करने पर उसे राजनैतिक उथल-पुथल होने का भय था। पाठ के दूसरे भाग का अध्ययन करते हुए, हम देखेंगे कि दूसरों ने ''मैं यीशु को क्या करूं?'' प्रश्न का उत्तर कैसे दिया। हम पिलातुस का अन्तिम उत्तर भी देखेंगे।

हेरोदेस: ''मैं तो केवल जिज्ञासु होऊंगा'' (लूका 23:5-11)

पाठ के अन्त में, पिलातुस को लगा था कि उसे अपनी दुविधा का हल मिल गया है। उसे पता चला कि यीशु गलीली है (आयतें 5, 6), जो हेरोदेस अन्तिपास का कार्यक्षेत्र था, जिस कारण उसने ''उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि उन दिनों वह यरूशलेम में था''[1] (आयत 7)। यीशु को हेरोदेस के पास भेजकर, राज्यपाल को दोहरा उद्देश्य पूरा होने

की आशा थी: एक तो यह कि वह इस परेशानी से मुक्त हो जाएगा और दूसरा यह कि हो सकता है कि इससे प्रभावशाली हाकिम के साथ उसके सम्बन्ध भी सुधर जाएं (देखें 23:12)।[2]

रोमी सिपाही यीशु को हेरोदेस के पास ले गए।[3] उनके पीछे-पीछे ''महायाजक और शास्त्री'' भी आ रहे थे (आयत 10)। जुलूस के हेरोदेस के महल के निकट पहुंचने पर, राजा ''बहुत ही प्रसन्न हुआ, क्योंकि वह बहुत दिनों से [यीशु] को देखना चाहता था: इसलिए कि उसने उसके विषय में सुना था'' (आयत 8क; देखें मत्ती 14:1; लूका 9:7-9)। यीशु से मिलने की हेरोदेस की इच्छा उसे सुनने के लिए नहीं थी; वह तो केवल जिज्ञासु था। मसीह की इच्छा उसकी जिज्ञासा को संतुष्ट करने की कदापि नहीं थी (देखें मत्ती 7:6)। जब हेरोदेस ने यीशु से सवाल पूछे, तो ''उसने उसको कुछ भी उत्तर न दिया'' (लूका 23:9; देखें यशायाह 53:7)। राजा को जादू का खेल देखकर मनोरंजन होने की भी उम्मीद थी (लूका 23:8ख) परन्तु मसीह ने कभी किसी के कहने पर कोई आश्चर्यकर्म नहीं किया (देखें 12:38, 39; 16:1, 4)। उसके ''चिह्नों'' का उद्देश्य अधिक गम्भीर था।

जब यीशु ने उसकी बात मानने से इनकार कर दिया,[4] तो हेरोदेस ने अपने ही मनोरंजन की युक्ति बनाई। शीघ्र ही वहां सर्कस जैसा माहौल बन गया था। एक ओर महायाजक और ग्रंथी थे, जो ज़ोर-ज़ोर से शोर मचाते हुए आरोप लगा रहे थे (लूका 23:10)। दरबार के मध्य में यीशु एक मसखरे की तरह वस्त्र पहने[5] हुए था, जबकि राजा और उसके सिपाही उसका ठट्ठा उड़ाते हुए उसके ईर्द-गिर्द नाच रहे थे (लूका 23:11क)।[6] अन्त में, वे बचकाना खेल से थक गए और हेरोदेस ने ''उसे पिलातुस के पास वापस भेज दिया'' (लूका 23:11ख)।

अफ़सोस कि आज कुछ लोगों को यीशु में हेरोदेस वाली दिलचस्पी ही है। वे उसके बारे में जानने की जिज्ञासा रखते हैं। वे सरसरी तौर पर उस पर चर्चा जारी रखकर उसके बारे में जानना चाहते हैं, पर यह जानने के लिए कि वह वास्तव में कौन है, वे गम्भीरता से सुसमाचार के वृत्तंतों को न पढ़ते और न उनका अध्ययन करते हैं। इसी कारण, वे कभी उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में स्वीकार नहीं कर पाते या अपने जीवन उसे दे नहीं पाते। एक पुरानी कहावत है कि ''जिज्ञासा ने बिल्ली की जान ले ली''; जिज्ञासा आत्मा को भी मार सकती है, यदि यीशु में किसी की दिलचस्पी उस पर केन्द्रित न हो।

भीड़: ''हम उसे क्रूस पर चढ़ाएंगे!'' (मत्ती 27:15-23; मरकुस 15:6-14; लूका 23:12-23; यूहन्ना 18:39-19:12)

यीशु को हेरोदेस के पास भेजकर पिलातुस ने एक उद्देश्य पूरा किया था: उसने राजा के साथ अपना सम्बन्ध सुधार लिया था (लूका 23:12)। परन्तु उसने दूसरा उद्देश्य पूरा नहीं किया था: क्योंकि यीशु के साथ व्यवहार करने की ज़िम्मेदारी उसी की थी। राज्यपाल ने उसे दोबारा छोड़ देने की कोशिश की।

> पिलातुस ने महायाजकों और सरदारों और लोगों को बुलाकर उन से कहा। तुम इस मनुष्य को लोगों का बहकाने वाला ठहराकर मेरे पास लाए हो, और देखो, मैं ने तुम्हारे साम्हने उसकी जांच की, पर जिन बातों का तुम उस पर दोष लगाते हो, उन बातों के विषय में मैंने उस में कुछ दोष नहीं पाया है; न हेरोदेस ने,[7] क्योंकि उस ने उसे हमारे पास लौटा दिया है: और देखो, उस से ऐसा कुछ नहीं हुआ कि वह मृत्यु दण्ड के योग्य ठहराया जाए। इसलिए मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूं (लूका 23:13-16)।

दूसरी बार, पिलातुस ने यीशु को ''दोषी नहीं'' घोषित कर दिया। इससे एक प्रश्न खड़ा होता है कि यदि पिलातुस ने उसे निर्दोष पाया, तो उसने उसे दण्ड क्यों दिया? राज्यपाल को उम्मीद थी कि मसीह को कोड़े मारने से यहूदी खुश हो जाएंगे और वह उसे छोड़ देगा (लूका 23:16; आयत 22 भी देखें)। लूका 23:16 में अनुवाद किए ''पिटवाकर'' शब्द का अर्थ ''सिखाना या प्रशिक्षण देना'' है।[8] एक अर्थ में पिलातुस ने यहूदी अगुओं को बताया, ''मैं इस आदमी को सबक सिखाऊंगा!''

''पाठशाला का कमरा'' जहां ''सबक'' सिखाया गया, कोड़े मारने का कक्ष था (यूहन्ना 19:1; देखें मत्ती 27:26; मरकुस 15:15)।[9] जे. डब्ल्यू. शेपर्ड ने रोमी कोड़े का विवरण दिया:

> कोड़ा बंजुफल के आकार की सिक्के की गेंदों या नुकीली हड्डियों या मेखें लगी चमड़े की कई पट्टियों वाला एक चाबुक होता था। दण्ड पाए हुए व्यक्ति के कपड़े खींचकर उसके हाथ किसी खम्भे या खूंटे से बांधकर छह [जल्लादों] द्वारा उसकी पीठ पर मारा जाता था। जिन्होंने प्रताड़ना के उन औज़ारों को ऐसे बनाया होता था कि कैदी अधमरा सा हो जाता था। हर प्रहार कटे हुए मांस को काटता, जिससे नसें और कई बार आंतें भी दिखाई देने लगतीं। मुंह पर लगा कोड़ा आम तौर पर आंखों और दांतों पर लग जाता था। कोड़ों से व्यक्ति अधमरा हो जाता, कई बार तो मर भी जाता था।[10]

यीशु को ऐसे ''दण्ड दिया गया'' था। जैसे कि इतना ही काफ़ी न हो, फिर उसे पीटने वालों द्वारा ठट्ठे किए गए। ''सिपाहियों ने कांटों का मुकुट गूंथकर[11] उसके सिर पर रखा और उसको बैंजनी वस्त्र पहिनाए।[12] और उसके पास आ-आकर कहने लगे, हे यहूदियों के राजा, प्रणाम! और उसे थप्पड़ भी मारे'' (यूहन्ना 19:2, 3; देखें मत्ती 20:19)।

पिलातुस ने सोचा होगा, ''जब इसके शत्रु देखेंगे कि यीशु के साथ क्या हुआ है, तो वे निश्चय ही शांत हो जाएंगे!'' बाहर जाकर उसने कहा, ''देखो, मैं उसे तुम्हारे पास फिर बाहर लाता हूं; ताकि तुम जानो कि मैं उसमें कुछ भी दोष नहीं पाता'' (यूहन्ना 19:4क)। यीशु को लोगों के सामने लाया गया। उसके सिर पर कांटों का एक मुकुट था (यूहन्ना 19:5क); उसके सिर में ठुके काटों के कारण उसके सिर से लहू बह रहा था। उसकी पीठ

पर एक फटा हुआ वस्त्र था (यूहन्ना 19:5ख), जो उसकी घायल पीठ से बहे लहू से सना हुआ था। यीशु की ओर संकेत करते हुए, पिलातुस ने कहा, ''देखो, यह पुरुष!'' (यूहन्ना 19:5ग)।[13]

यदि राज्यपाल को यह उम्मीद थी कि खून के प्यासे यहूदी कोड़े मारने से शांत हो जाएंगे, तो उसे निराशा ही मिली। महायाजक और अधिकारी पुकार उठे, ''उसे क्रूस पर चढ़ा, क्रूस पर!'' (यूहन्ना 19:6क)। क्रोध में पिलातुस ने कहा होगा, ''यदि तुम उसे क्रूस पर चढ़ाने पर इतना ही तुले हुए हो, तो जाओ *जो मन में आए करो*-क्योंकि मैं इस आदमी में कोई दोष नहीं पाता''[14] (देखें यूहन्ना 19:6ख)। उसकी आवाज़ में कुछ उपहास होगा, क्योंकि उसे भी और उन्हें भी मालूम था कि रोमी लोग यहूदियों में से किसी को क्रूस पर चढ़ाने की अनुमति नहीं देते थे।

यहूदी अगुवे डरे नहीं। कठोरतापूर्वक उन्होंने पिलातुस पर दबाव बढ़ाया: ''हमारी भी व्यवस्था है और उस व्यवस्था के अनुसार यह मारे जाने के योग्य है, क्योंकि उस ने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र बनाया'' (यूहन्ना 19:7) है।[15] अन्य शब्दों में, ''*तुझे* इस पर राजद्रोह का आरोप मिले या न, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। *हम* कहते हैं कि उसे मरना होगा, तो उसे मृत्यु का दण्ड तू ही *देगा!*''

जब पिलातुस ने यह सुना कि यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया था (यूहन्ना 19:7), तो इससे वह ''और भी डर गया'' (19:8)। यूनानी और रोमी मिथ्य में देवताओं के मनुष्यों का रूप धारण करने की कई दंतकथाएं थीं (देखें प्रेरितों 14:11, 12)। वह अपने कक्ष में वापस गया और एक बार फिर यीशु को उसके सामने लाया गया। घबराए हुए, उसने पूछा, ''तू कहां का है?'' (यूहन्ना 19:9क)। अन्य शब्दों में, ''तू पृथ्वी का है या स्वर्ग से आया है-शायद ओलंपस पर्वत जैसे देवताओं के किसी निवास स्थान से?'' ''यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया'' (यूहन्ना 19:9ख)।

पिलातुस ने उस पर उत्तर देने के लिए दबाव डाला: ''क्या तू नहीं जानता कि [मुकदमे के खत्म होने के बाद भी] तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है?'' (यूहन्ना 19:10)। तब यीशु बोला, पर उसके उत्तर से पिलातुस का मन ठण्डा नहीं हुआ: ''यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता'' (यूहन्ना 19:11क)।

मसीह ने आगे कहा कि ''जिस ने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है, उस [अर्थात, कायफ़ा] का पाप अधिक है'' (यूहन्ना 19:11ख)। पिलातुस को कायफ़ा की तरह यीशु के बारे में जानने का अवसर नहीं मिला था (देखें लूका 12:48)। इसके अलावा इस राज्यपाल के मन में कायफ़ा की तरह उसके प्रति घृणा नहीं थी। पिलातुस निर्दोष नहीं था (देखें प्रेरितों 4:27), परन्तु महायाजक (और उसके द्वारा प्रभावित हुए यहूदियों) का दोष अधिक होना था (देखें प्रेरितों 2:23, 36; 3:13-15, 17; 5:28, 30; 7:52; 13:27, 28; 1 थिस्सलुनीकियों 2:14, 15)।

इस बातचीत से पिलातुस ने यीशु को छुड़ाने का रास्ता निकाला (यूहन्ना 19:12क;

देखें लूका 23:20)। उसे स्पष्ट हो गया था कि यीशु ने ऐसा कुछ नहीं किया, जिससे रोमी या यहूदी मापदण्डों के अनुसार उसे दोषी ठहराया जाए, पर ''महायाजकों ने उसे डाह से पकड़वाया था''[16] (मरकुस 15:10)। मसीह की पिटाई से यहूदी शांत नहीं हुए थे, बल्कि और युक्तियां बना रहे थे।

यह विचार करते हुए कि क्या करना है, पिलातुस बाहर आ गया।[17] वहां उसने भीड़ को प्रतीक्षा करते हुए पाया (मरकुस 15:8क)। यह कुछ सिरफिरे लोगों का झुंड नहीं था, जो यीशु की मृत्यु की मांग कर रहा था। यह दल रोमियों द्वारा फसह के पर्व पर एक कैदी को छोड़ने की रियायत मांगने आया था (मरकुस 15:8; मत्ती 27:15; यूहन्ना 18:39)।[18] उनके विनती करने पर, पिलातुस ने यीशु को छोड़ देने की एक और योजना बनाई। आम तौर पर राज्यपाल यहूदियों को अपनी पसंद के अनुसार किसी को छुड़ाने के लिए चुनने को कहता था (देखें मत्ती 27:15)। इस बार उसने घृणित विश्वासघाती और यीशु दोनों में से एक को चुनने का अवसर देना था।

''उस समय बरअब्बा नाम उन्हीं में का एक नामी बन्धुआ था''[19] (मत्ती 27:16)। ''बरअब्बा'' नाम का अर्थ है ''अब्बा का पुत्र'' अन्य शब्दों में, ''[मेरे] पिता का पुत्र।''[20] उसे ''किसी बलवे के कारण जो नगर में हुआ था और हत्या के कारण बन्दीगृह में डाला गया था'' (लूका 23:19)। शायद वह पिलातुस द्वारा यरूशलेम में जलसेतु बनाने के लिए मन्दिर के कोष का इस्तेमाल करने पर उठने वाले विद्रोह का अगुआ था।[21] बरअब्बा एक डाकू (यूहन्ना 18:40)[22] और हत्यारा[23] (लूका 23:19ख) भी था। पिलातुस ने सोचा होगा कि बरअब्बा ऐसा व्यक्ति नहीं है, जिसे सही सोच वाले लोग समाज में खुला छोड़ना पसन्द करेंगे।

राज्यपाल ने लोगों को यह पसन्द चुनने के लिए दे दी: ''तुम किस को चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिए छोड़ दूं? बरअब्बा को या यीशु को, जो मसीह कहलाता है?'' (मत्ती 27:17; देखें मरकुस 15:9)। बरअब्बा के प्रति रुचि के अलावा, राज्यपाल ने पांच दिन पहले यीशु की प्रसिद्धि को भी ध्यान में रखा होगा।[24]

लोगों के बातें करते हुए कि इनमें से किसे चुना जाए, पिलातुस को लगा होगा कि उसने यहूदी विरोधियों का मुंह बन्द कर दिया है, परन्तु किसी भी प्रकार का आत्मसंतोष शीघ्र ही समाप्त हो जाना था। उसके वहां बैठे हुए,[25] ''उसकी पत्नी ने उसे कहला भेजा, कि तू उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना; क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुख उठाया है''[26] (मत्ती 27:19)। इससे यह अधिकारी और भी बेचैन हो गया (देखें यूहन्ना 19:8)।

पिलातुस को महायाजकों और पुरनियों की ताकत का अंदाज़ा नहीं था। उसने यह भी गलत अनुमान लगाया हो सकता है कि बरअब्बा के बारे में लोगों का क्या मानना था। एक इनसान के रूप में बरअब्बा चाहे कितना भी घृणित हो, परन्तु घृणित रोमियों के विरुद्ध लड़ने के कारण यह अपराधी लोगों में एक नायक की तरह होगा। हर हाल में, यहूदी अगुवे भीड़ को समझाने में सफल हो गए कि ''वे बरअब्बा को मांग लें और यीशु का नाश कराएं'' (मत्ती 27:20)।

राज्यपाल भीड़ के निर्णय से स्तब्ध और निराश हो गया होगा, क्योंकि ''... सब मिलकर चिल्ला उठे, कि इसका काम तमाम कर और हमारे लिए बरअब्बा को छोड़ दे'' (लूका 23:18; देखें मत्ती 27:21)। पहरेदारों से घिरे पिलातुस ने हमारे दो भाग के पाठ में दिया गया प्रश्न पूछा: ''फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करूं?'' (मत्ती 27:22क)। उन्होंने चिल्लाते हुए उत्तर दिया, ''वह क्रूस पर चढ़ाया जाए!'' (मत्ती 27:22ख; देखें मरकुस 15:12, 13; लूका 23:21)।[27]

फिर पिलातुस ने न्याय के लिए लोगों को अपने अन्तर्मन में दिखाने की कोशिश की। ''उस ने तीसरी बार उन से कहा; क्यों उस ने कौन सी बुराई की है? मैंने उस में मृत्यु दण्ड के योग्य कोई बात नहीं पाई!'' (लूका 23:22; देखें मरकुस 15:14क)। परन्तु उसके सुनने वालों को न्याय में कोई रुचि नहीं थी: ''वे चिल्ला-चिल्लाकर पीछे पड़ गए, कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए'' (लूका 23:23क; देखें मरकुस 15:14ख)।

परमेश्वर के लोगों द्वारा परमेश्वर के पुत्र को ठुकराने का मर्मस्पर्शी दृश्य देखते हुए,[28] हमें लग सकता है कि किसी और ने यीशु के बारे में यह कहने का साहस कभी नहीं किया कि ''हम उसे क्रूस पर चढ़ाएंगे!'' परन्तु इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने लिखा है कि विश्वास से गिरने वाले लोग ''परमेश्वर के पुत्र को अपने लिए फिर क्रूस पर चढ़ाते हैं और प्रकट में उस पर कलंक लगाते हैं'' (इब्रानियों 6:6)। यीशु का चेला होने के नाते, क्या आप कभी उससे पीछे हटने की परीक्षा में पड़े हैं? याद रखें कि यदि आप ऐसा करते हैं तो आप नये सिरे से उसके हाथों और पांवों में कीलें ठोक रहे होंगे। पतरस ने मसीही लोगों से जो एक बार फिर संसार में लौट गए थे, कहा ''उनकी पिछली दशा पहिली से भी बुरी हो गई है'' (2 पतरस 2:20; देखें आयतें 21, 22)। अपने कार्यों से कभी भी न कहें कि ''मैं उसे क्रूस पर चढ़ाऊंगा!''

पिलातुस: ''मैं तटस्थ रहूंगा'' (मत्ती 27:24-31; मरकुस 15:15-20; लूका 23:23-25; यूहन्ना 19:12-16)

भीड़ के यीशु को क्रूस पर चढ़ाने का शोर जारी रहते हुए, ''उनका चिल्लाना प्रबल हुआ'' (लूका 23:23ख)। पिलातुस को यह स्पष्ट होता जा रहा था कि यहूदियों को यीशु की मृत्यु से ही शांति मिलेगी।

राज्यपाल का कोई भी बचा हुआ विरोध यहूदी अगुओं की इस चिल्लाहट से शांत हो गया कि ''यदि तू इस को छोड़ देगा तो तेरी भक्ति कैसर की ओर नहीं; जो कोई अपने आप को राजा बनाता है, वह कैसर का साम्हना करता है'' (यूहन्ना 19:12ख)। उस समय, कैसर तिबरियुस था (देखें लूका 3:1)। तिबरियुस के शासन का अन्तिम भाग ''बेवजह ईर्ष्या, संदेह तथा क्रूरता'' के लिए प्रसिद्ध था।[29] बहुत से अधिकारियों को ''*maiestas minuta*'' अर्थात राज्य की सुरक्षा की अवहेलना करने का आरोप लगाकर रोम में वापस बुलाया जा रहा था।[30] क्योंकि पिलातुस की स्थिति बहुत पतली थी, इसलिए उसने यहूदियों की औपचारिक शिकायत करने का जोखिम उठाने का साहस नहीं किया।[31]

न्याय की गद्दी पर बैठे हुए (यूहन्ना 19:13ख) रोमी अधिकार के प्रतीक, पिलातुस ने भीड़ के सामने यीशु को वापस बुलवाया (यूहन्ना 19:13क)। उसने कहा, ''देखो तुम्हारा राजा!'' (यूहन्ना 19:14ग)। वे चिल्लाकर कहने लगे, ''ले जा! ले जा! उसे क्रूस पर चढ़ा'' (यूहन्ना 19:15क)। पिलातुस ने पूछा, ''क्या मैं तुम्हारे राजा को क्रूस पर चढ़ाऊं?'' (यूहन्ना 19:15ख)। ''महायाजकों ने उत्तर दिया, कि कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं'' (यूहन्ना 19:15ग)!

यदि हमें कभी सबूत चाहिए कि घृणा मनों में परदा डाल देती है और न्याय का नाश होता है, तो यह सबसे अच्छा उदाहरण है: ''कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं''? क्या परमेश्वर इस्राएल का हाकिम नहीं था (भजन संहिता 10:16; मत्ती 5:35)? क्या वे आने वाले मसीहा की राह नहीं देख रहे थे, जिसने उनका राजा होना था (जकर्याह 9:9; मत्ती 21:5)? अपनी ईर्ष्या से भरे यहूदी पुरोहिततन्त्र ने हज़ारों वर्षों से मानी जाने वाली पवित्र सच्चाइयों को त्याग दिया।

इस सारे समय में, भीड़ ''उसे क्रूस पर चढ़ा'' की रट लगा रही थी (मत्ती 27:23), जिससे ऐसी लहर बन सकती थी, जिसका रोमी अधिकारी को भय रहता था, क्योंकि इससे दंगा भड़क सकता था।[32] दंगा भड़कने से यहूदिया पर शासन करने की पिलातुस की क्षमता पर सवाल उठ सकता था। राज्यपाल को अपनी नौकरी और एक निर्दोष को छोड़ने के बीच में से एक को चुनने का तुरन्त निर्णय लेना था। उसे निर्णय लेने में अधिक समय नहीं लगा: उसने यीशु को बचाने के सभी प्रयास छोड़ दिए (देखें मत्ती 27:24क)।

पिलातुस ने पानी का एक बर्तन मंगवाकर ''भीड़ के साम्हने अपने हाथ धोए और कहा; मैं इस धर्मी के लोहू से निर्दोष हूं'' (मत्ती 27:24ग)। यहूदी इस सांकेतिक कार्य को समझते थे (व्यवस्थाविवरण 21:1-9; देखें भजन संहिता 26:6; 73:13)।[33] पिलातुस अपने आप को ज़िम्मेदारी से स्वतन्त्र करने का प्रयास कर रहा था; पर यह बात रह जाती है कि रोमी राज्यपाल के रूप में, निर्णय लेने का अन्तिम अधिकार उसी के पास था। वह अपने हाथों से मैल तो उतार सकता था, पर अपने मन पर लगा दोष नहीं।

''मैं यीशु को क्या करूं?'' प्रश्न के सम्बन्ध में पिलातुस ने उत्तर देने का प्रयास किया, ''मैं तटस्थ रहूंगा।'' समस्या यही है कि यीशु के बारे में तटस्थ नहीं रहा जा सकता। मसीह ने कहा, ''जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है'' (मत्ती 12:30क)। मसीह को *ग्रहण* न कर पाने का निर्णय उसे *ठुकराने* का निर्णय है। यीशु ने स्पष्ट कहा, ''जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है, उस को दोषी ठहराने वाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा'' (यूहन्ना 12:48)। तटस्थ रहना प्रभु के बारे में निर्णय लेने का कोई विकल्प नहीं है।

यीशु की मृत्यु के सम्बन्ध में निर्दोष होने का दावा करने के बाद पिलातुस ने भीड़ से कहा, ''तुम ही जानो'' (मत्ती 27:24घ)। उन्होंने उत्तर दिया, ''इसका लोहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो'' (मत्ती 27:25)। यह कहकर यहूदियों ने स्वेच्छा से परमेश्वर के अपने पुत्र को मार डालने का दोष स्वीकार किया।[34]

''पिलातुस ने भीड़ को प्रसन्न करने की इच्छा से'' (मरकुस 15:15क) अन्त में ''आज्ञा दी कि उनकी विनती के अनुसार किया जाए। उसने उस मनुष्य को, जो बलवे और हत्या के कारण बन्दीगृह में डाला गया था, और जिसे वे मांगते थे, छोड़ दिया'' (लूका 23:24, 25क)। फिर उसने यीशु को ''क्रूस पर चढ़ाने'' के लिए सौंप दिया (मत्ती 27:26ख)।[35]

यूहन्ना ने इतिहास बदलने वाले इस निर्णय का स्थान बताया है: ''उस जगह एक चबूतरा था, जो इब्रानी में गब्बता कहलाता है''[36] (यूहन्ना 19:13ग)।[37] इस प्रेरित ने उस दिन के बारे में भी लिखा है कि ''यह फसह की तैयारी का दिन था'' (यूहन्ना 19:14क)। संदर्भ में, यह वाक्यांश आठ दिन तक चलने वाले पर्व के बीच आए सब्त के लिए तैयारी का दिन है (देखें यूहन्ना 19:31; मरकुस 15:42; लूका 23:54)। यूहन्ना ने तो समय भी बता दिया: ''छठे घण्टे के लगभग'' (यूहन्ना 19:14ख)। यूहन्ना ने समय की रोमी गणना की।[38] उस गणना के अनुसार, ''छठा घण्टा'' प्रात: 6:00 बजे होगा। यूहन्ना के ''छठे घण्टे के *लगभग*'' कहने का अर्थ यह हुआ कि इससे थोड़ा बाद में हो सकता है, पर भीड़ को पिलातुस के द्वारा सौंपने के समय अभी दिन चढ़ा ही था।

पिलातुस ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के लिए अपने सिपाहियों को सौंप दिया। उसे और दो अन्य लोगों को क्रूस पर चढ़ाने के लिए, जिन्हें मृत्युदण्ड दिया गया था, प्रबन्ध करने में (देखें मरकुस 15:25) समय लगा।[39] सिपाहियों ने वह समय पहले आरम्भ किए गए भद्दे ''खेल'' को फिर शुरू करके बिताया।[40] इस बार ''सारी पलटन'' ने प्रभु को गालियां दीं और उसका ठट्ठा उड़ाया (मरकुस 15:16-19; मत्ती 27:27-30 भी देखें)।

अन्तत: मृत्यु दण्ड देने की सब तैयारियां पूरी हो गईं। सिपाहियों ने ''[यीशु का] बागा उस पर से उतारकर फिर उसी के कपड़े उसे पहिनाए और क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले चले'' (मत्ती 27:31)।

सारांश

दो भागों के अपने पाठ में, हमने ''यीशु को मैं क्या करूं?'' प्रश्न के कई उत्तर देखे हैं।

- यहूदा का उत्तर था ''मैं उसे बेच दूंगा।''
- पतरस का उत्तर था ''मैं उसका इनकार करूंगा।''
- महासभा का उत्तर था ''हम उस पर दोष लगाएंगे।''
- हेरोदेस का उत्तर था ''मैं केवल जिज्ञासु होऊंगा।''
- भीड़ का उत्तर था ''हम उसे क्रूस पर चढ़ाएंगे।''
- पिलातुस का उत्तर था ''मैं तटस्थ रहूंगा।''

इन लोगों ने इस प्रकार उत्तर क्यों दिए? यहूदा ने शैतान के सामने समर्पण कर दिया था (देखें लूका 22:3; यूहन्ना 13:27)। पतरस ने स्पष्टतया भय के सामने समर्पण कर दिया

था। महासभा ने द्वेष और पूर्वधारणा के सामने समर्पण कर दिया था (मरकुस 15:10)। हेरोदेस ने अपने अधार्मिक स्वभाव के सामने समर्पण कर दिया था। भीड़ ने अपने हठी अगुओं के सामने समर्पण कर दिया था। पिलातुस ने भीड़ के सामने समर्पण कर दिया था (मरकुस 15:15)।[41] अफ़सोस कि इनमें से किसी ने भी परमेश्वर के सामने समर्पण नहीं किया था (देखें रोमियों 6:13)।[42]

आप को ''मैं यीशु को क्या करूं?'' प्रश्न का उत्तर क्या देना *चाहिए?* किस उत्तर से आप के प्राण बचेंगे और आपके जीवन में आशीष मिलेगी? सही उत्तर पिन्तेकुस्त के दिन दिया गया था, जब तीन हज़ार लोगों के कहने का अर्थ था कि ''हम उसे ग्रहण करेंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे!'' (प्रेरितों 2:37, 38, 41)।

अब ''मैं यीशु को क्या करूं?'' प्रश्न का उत्तर देने की बारी *आपकी* है। मेरी प्रार्थना है कि आप अपने आप को प्रभु को सौंप दें और आपका उत्तर पिन्तेकुस्त के दिन दिया गया यहूदियों वाला उत्तर ही हो। उसे परमेश्वर का पुत्र मानें और उसकी इच्छा के अनुसार करें!

नोट्स

यीशु के मुकदमों पर प्रवचन की एक समीक्षा ''आपका निर्णय क्या है?'' पाठ में आरम्भ होती है।

यह पिलातुस के पात्र प्रवचन पर प्रचार करने का एक उपयुक्त स्थान होगा: ''आदमी जिसने ज़िम्मेदारी टालने की कोशिश की।'' आज बहुत से लोग अपनी गलतियों और बुराइयों के लिए समाज, माता-पिता, जीवन-साथी, बुरी संगति, शराब, नशे आदि पर दोष लगाकर ज़िम्मेदारी के ''अपने हाथ धोना'' चाहते हैं। पिलातुस पर दो भागों के पाठ और उस पर अतिरिक्त अध्ययन में आपको काफ़ी सामग्री मिल जाएगी।

नील पोलर्ड ने इस अधिकारी पर प्रवचन का एक और ढंग निकाला: ''पिलातुस की गलतियां।''[43] उसने चार गलतियां गिनाईं: (1) पिलातुस ने ज़िम्मेदारी दूसरों पर डालने की कोशिश की (लूका 23:5-7), (2) उसने बुराई से समझौता करना चाहा (लूका 23:13-16), (3) उसे लगा कि वह परिस्थिति से अपने हाथ धो सकता है (मत्ती 27:24) और (4) उसने छोड़ दिया (मत्ती 27:26)। आप इसमें और जोड़ सकते हैं।

अन्तिम विचार इस प्रकार है: पिलातुस की बात ''देखो, यह पुरुष!'' (यूहन्ना 19:5) का इस्तेमाल यीशु को ऊंचा उठाने वाले सामान्य प्रवचन के परिचय के लिए किया गया है।

टिप्पणियां

[1]पिलातुस फसह का पर्व शांतिपूर्वक कराने के लिए यरूशलेम में था; नि:संदेह हेरोदेस वहां यहूदियों को प्रभावित करने के उद्देश्य से आया था। [2]हेरोदेस अन्तिपास के साथ अच्छे सम्बन्ध होना पिलातुस के लिए लाभदायक होना था: ''अन्तिपास ... सम्राट तिबरियुस के निकट था [जोसेफस *एंटिक्विटीज़ ऑफ़ द ज्यूस*

18.2.3; 18.4.5]'' (ब्रूस कोरली, ''ट्रायल्स ऑफ़ जीज़स,'' *डिक्शनरी ऑफ़ जीज़स एण्ड द गॉस्पल्स,* सं. जोयल बी. ग्रीन एण्ड स्कॉट मैक्नाइट [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस, इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1992], 848)। पिलातुस और हेरोदेस के शत्रु होने के बारे में, पुस्तक में आगे पिलातुस पर अतिरिक्त लेख देखें। [3]हम पक्का नहीं बता सकते कि वे यीशु को कहां ले गए। यदि प्रिटोरियम एंटोनिया के किले में था तो हेरोदेस अंतिपास नगर के पश्चिम में अपने पिता द्वारा बनाए महल में रह रहा होगा। यदि पिलातुस का प्रिटोरियम हेरोदेस महान का महल था, तो हम नहीं जानते कि हेरोदेस अन्तिपास कहां रह रहा था। [4]प्राचीन राजाओं के पास ऐसे लोग होते थे, जिनकी ज़िम्मेदारी उनका मनोरंजन करना ही होती थी। भड़कीले वस्त्र पहनने वाले इन लोगों को ''भांड'' या ''मूर्ख'' कहा जाता था। वे चुटकुले सुनाने या मज़ाकिया गीत गाने और मूर्खतापूर्ण व्यंग्य करके मन बहलाने के कई तरीके इस्तेमाल करते थे। कुछ लोग तो जादू के छोटे-छोटे करतब या बाज़ीगरी भी करते थे। [5]लूका 23:11 का ''भड़कीला वस्त्र'' हेरोदेस के फैंके गए वस्त्रों में से हो सकता है। यह वस्त्र यीशु को सम्मान देने के लिए नहीं, बल्कि उसका मज़ाक उड़ाने के लिए बनाया गया था। [6]प्रेरितों 4:27 में, हेरोदेस को यीशु के साथ अपने व्यवहार का दण्ड मिला। [7]स्पष्टतया, हेरोदेस ने यीशु को दोषी नहीं ठहराया था और उसे वापस भेज दिया था, पिलातुस को यह लगा कि राजा ने आरोप खारिज कर दिए हैं। [8]डब्ल्यू. ई. वाईन, मैरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम वाइट, जूनियर, ''*paideuo,*'' वाईन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स (नैशविल्ले: थोमस नैलसन पब्लिशर्स, 1996), 97. [9]यह स्पष्ट नहीं है कि यहूदी अगुओं को लुभाने के लिए पिलातुस के प्रयासों के भाग के रूप में इस समय कोड़े मारे गए या नहीं, या बाद में जल्लाद की क्रूरतापूर्वक तैयारी के भाग के रूप में क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले मारे गए। [10]जे. डब्ल्यू. शेपर्ड, *द क्राइस्ट ऑफ़ द गॉस्पल्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1939) 589. रोमियों द्वारा कोड़े मारे जाने का यह शब्दचित्रण विलियम डी. एडवर्ड्स, वैसली जे. गेबल एण्ड फ्लोयर्ड ई. होसमर, ''ऑन द फिज़िकल डैथ ऑफ़ जीज़स क्राइस्ट,'' *द जरनल ऑफ़ द अमेरिकन मैडिकल एसोसिएशन* (21 मार्च 1986): 1457-58 में मैडिकल दृष्टिकोण से दिया गया है।

[11]हम नहीं जानते कि स्थानीय कांटों की कैसी झाड़ियों से कांटों का मुकुट बनाया गया था। कुछ लोगों का विचार है कि यह लम्बे कांटों वाले जंगली गुलाब से बनाया गया था, जिसके कांटे दो इंच तक लम्बे होते हैं। *किसी* भी तरह के कांटे से बनाया गया मुकुट अत्यंत पीड़ादायक होगा, जैसा कि सिखाने के लिए विज़ुअल ऐड में कांटों का मुकुट पकड़ने पर मैंने पाया था। [12]यह हेरोदेस द्वारा यीशु को पहनाया गया ''भांड का वस्त्र'' हो सकता है (देखें टिप्पणी 5), या यह सेना का फैंका गया कोई वस्त्र हो सकता है। [13]पिलातुस द्वारा आम तौर पर यीशु के लिए ''राजा'' शब्द का इस्तेमाल किया गया (देखें मरकुस 15:9, 12; यूहन्ना 18:39), ''पुरुष'' शब्द का इस्तेमाल महत्वपूर्ण होगा। पिलातुस यहूदियों से यह कह रहा हो सकता है, ''देखो! वह केवल एक मनुष्य है, जिसका लहू किसी दूसरे मनुष्य की तरह बह रहा है! उसमें ऐसा कुछ नहीं है, जिससे आपको चिंता करने की आवश्यकता हो।'' [14]यूनानी शास्त्र में, ''तुम'' और ''मैं'' शब्दों पर ज़ोर दिया गया है। [15]यहूदी अगुवे बाद में बग़ावत का आरोप लगा रहे थे (यूहन्ना 19:12); परन्तु इस समय उन्होंने राजनैतिक आरोप छोड़कर धार्मिक आरोप लगाया, जिसके लिए उन्होंने यीशु को दोषी ठहराया था (परमेश्वर की निंदा का आरोप)। [16]यह विजयी प्रवेश तथा मंगलवार के दिन मन्दिर में होने वाले वाद-विवाद में यहूदी अगुओं को यीशु द्वारा हराने की बात हो सकती है। [17]स्पष्टतया, अभी के लिए, उसने यीशु को हिरासत में अन्दर छोड़ दिया (देखें यूहन्ना 19:13)। [18]पिलातुस ने यहूदियों को बताया, ''*तुम्हारी* यह रीति है कि मैं ... तुम्हारे लिए एक व्यक्ति को छोड़ दूं'' (यूहन्ना 18:39क)। यह सम्भवतया इस बात का संकेत है कि पिलातुस ने इस परम्परा का आरम्भ नहीं किया था, बल्कि इसका आरम्भ पिछले किसी रोमी अधिकारी ने किया था। उस समय यरूशलेम में इस परम्परा के होने का कोई ऐतिहासिक रिकॉर्ड नहीं है, परन्तु आज भी राजनैतिक अगुवे नाम कमाने के लिए कैदियों को छोड़ते रहते हैं। [19]एक प्राचीन हस्तलिपि के अनुसार, उसका पूरा नाम ''यीशु बरअब्बा'' था। शायद इसी लिए ''यीशु'' से जो ''बरअब्बा'' कहलाता था, अन्तर करने के लिए यीशु को ''यीशु को जो मसीह कहलाता है'' कहा। [20]''अब्बा'' शब्द के अर्थ के लिए पुस्तक में पहले आए पाठ ''बाग में'' में देखें।

[21]पृष्ठ 182 पर पिलातुस पर जानकारी देखें। [22]यूनानी शब्द का अनुवाद ''डाकू'' हिंसा का संकेत देता है (पृष्ठ 140 पर ''विजय या त्रासदी'' पाठ देखें)। ''डाकू'' के बजाय NIV में ''एक विद्रोह में भाग लिया था'' है। यही शब्द यीशु के विरुद्ध महासभा के आरोप में इस्तेमाल किया गया था। [23]शायद उसने विद्रोह के दौरान रोमी सिपाहियों की हत्या की थी। [24]विजयी प्रवेश के दौरान यीशु को महिमा दी गई थी। [25]मत्ती 27:19 कहता है कि वह ''न्याय की गद्दी पर बैठा हुआ था।'' ''न्याय की गद्दी'' वाक्यांश का अनुवाद *बीमा* शब्द से हुआ है, जिसे उस ऊंचे स्थान के लिए इस्तेमाल किया जाता था, जिससे आधिकारिक घोषणाएं की जाती थीं। [26]अंधविश्वासी, अविश्वासी स्वप्नों से कई बातें बताते हैं, पर इसका अर्थ यह नहीं है कि हम भी ऐसा ही करें। आश्चर्यकर्मों के होने के समय, परमेश्वर कभी-कभी अपने लोगों से बात करने के लिए स्वप्नों का इस्तेमाल करता था (मत्ती 1:20; 2:12, 13, 19, 22), परन्तु अब ऐसा नहीं होता। इसके अलावा यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि पिलातुस की पत्नी के स्वप्न में किसी अलौकिक शक्ति का हाथ था। यह बात कि उसने यीशु को ''उस धर्मी'' कहा, उसके यीशु को पहले से जानने का संकेत है। शायद वह जानती थी कि रोमी सिपाहियों को यीशु को, जिसे वह एक धर्मी व्यक्ति के रूप में जानती थी, गिरफ्तार करने का काम सौंपा गया था और इससे उसे रात भर नींद नहीं आई थी। [27]बहुत से प्रचार करने वालों ने ध्यान दिया है कि सप्ताह के पहले दिन, ''होशाना'' पुकारने वाली भीड़ पांच दिन बाद ''क्रूस पर चढ़ाओ!'' पुकारना लोगों की चंचलता को दिखाता है। लोग चंचल हो सकते हैं और आसानी से गुमराह भी हो सकते हैं, पर ईमानदारी से, हमें यह मानना चाहिए कि रविवार के दिन जश्न मना रही भीड़ शुक्रवार के दिन खून की प्यासी भीड़ नहीं हो सकती। पर्व के लिए यरूशलेम में हज़ारों लोग आए हुए थे। [28]हज़ारों वर्षों तक इस्राएली परमेश्वर के चुने हुए लोग थे। [29]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914) 717. [30]ए. एन. शेरविन-वाइट, ''पाइलेट, पौंटियुस,'' *द इन्टरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो., सामान्य संस्करण ज्योफरी डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 3:868.

[31]पिलातुस के भय का आधार था। कुछ वर्ष बाद, एक शिकायत दर्ज की गई *थी* और उसे उसके पद से हटा दिया गया था। पृष्ठ 182 पर पिलातुस पर अतिरिक्त लेख देखें। [32]वाल्टर वैंगरिन, जूनियर, *द बुक ऑफ़ गॉड द बाइबल ऐज ए नॉवल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1996) 801. [33]अमेरिका में आज भी हम कहते हैं, ''मैं इस मामले से अपने हाथ धोता हूं।'' इसका अर्थ है कि ''मैं इससे सम्बन्ध नहीं रखना चाहता'' और इसका संकेत है कि ''इसके बाद जो भी हो उसमें मेरा कोई दोष नहीं होगा।'' [34]यह बात शब्दों या कामों से सामी विरोधी को उचित नहीं ठहराती। किसी न किसी तरह, कभी न कभी हम में से अधिकतर लोगों ने मसीह को क्रूस पर चढ़ाया और उसे सरेआम लज्जित किया है (देखें इब्रानियों 6:6)। यहूदी हों या अन्यजाति, हम *सभी* पापी हैं, जिन्हें परमेश्वर के अनुग्रह की आवश्यकता है (संदर्भ में देखें रोमियों 3:23)। [35]यूहन्ना 19:16 में है ''तब उसने उसे *उनके* हाथ सौंप दिया ताकि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।'' संदर्भ में, ''उनके'' याजकों को कहा गया है, पर यीशु को क्रूस पर याजकों ने नहीं चढ़ाया था। शब्दों का अर्थ यही है कि पिलातुस ने इन अगुओं की इच्छा पूरी करने के लिए उसे दे दिया। [36]''गब्बता'' का अर्थ ''ऊंचा स्थान'' है। यह यूनानी शब्द *बीमा* के अर्थ की तरह ही है (देखें टिप्पणी 25)। [37]आरम्भिक पाठकों को सही-सही पता होगा कि वह चबूतरा कहां है, पर हम नहीं बता सकते। पुरातत्व शास्त्रियों ने उस क्षेत्र में जहां एंटोनियाह का किला था एक चबूतरे की पहचान की है, परन्तु कुछ लोगों का मानना है कि ''चबूतरा'' हेरोदेस का महल था (प्रिटोरियम के स्थान पर पहले हुई चर्चा देखें)। [38]यूहन्ना का वृत्तांत सम्भवतया तीन अन्य वृत्तांतों से कई दशक बाद (''मसीह का जीवन, भाग 1'' में पृष्ठ 55 पर देखें), यरूशलेम के नाश होने के बहुत बाद लिखा गया स्पष्टतया समय की रोमी गणना का इस्तेमाल किया गया। यहूदी गणना के अनुसार, नये दिन का आरम्भ सूर्यास्त के समय होता था; रोमी गणना के अनुसार, नया दिन आधी रात (जैसे हम गणना करते हैं) को आरम्भ होता था। मरकुस, जिसने यहूदी गणना का इस्तेमाल किया ने कहा कि यीशु *पहर दिन* (मरकुस 15:25) अर्थात प्रात: 9 बजे क्रूस पर चढ़ाया गया। मत्ती ने यहूदी गणना का इस्तेमाल करते हुए कहा कि *दोपहर* से लेकर *तीसरे पहर* तक सारे देश में अंधेरा छाया रहा (मत्ती 27:45; देखें मरकुस 15:33; लूका 23:44) अर्थात 12 बजे

दोपहर से 3 बजे सायं तक, जिसके बाद यीशु मर गया (मत्ती 27:46-50; देखें मरकुस 15:34-37; लूका 23:44-46)। यूहन्ना का ''छठा घण्टा'' इस कालक्रम से तभी मेल खाता है, यदि यूहन्ना ने रोमी समय की गणना का इस्तेमाल किया। [39]पिलातुस द्वारा यीशु को प्रात: लगभग 6 बजे दण्ड देने के बाद (यूहन्ना 19:14 पर नोट्स देखें), यीशु को दण्ड देने और क्रूस पर चढ़ाने के बीच कई घण्टे बीत गए थे। इस समय का इस्तेमाल सम्भवतया आवश्यक तैयारियां करने के लिए किया गया। [40]इस बार खेल में एक सरकंडा जोड़ा गया, जिसका इस्तेमाल पहले ठट्ठा करने की छड़ी और फिर यीशु को मारने के लिए किया गया था (मत्ती 27:30)।

[41]विभिन्न प्रकार के दबाव का विचार वारेन डब्ल्यू वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैन्ट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 101 से लिया गया है। [42]*बाद में,* पतरस ने परमेश्वर के सामने समर्पण किया और भीड़ में से कुछ लोगों ने पिन्तेकुस्त के दिन-परन्तु इस अध्ययन में बताए गए समय के दौरान इनमें से किसी ने नहीं किया। [43]नील पोलर्ड, ''पाइलेट'स मिस्टेक्स,'' *विजिल* (नवम्बर-दिसम्बर 2001): 53-54.